

संपादकीय

कंगना ने शर्मिदा किया

कचरा जानकारी की अदाकारा साक्षित होती कंगना स्टैट ने अंतः देश की आजादी के इतिहास पर ही थूकने की विमुक्त कर डाली। एक टीवी कारबोर्न में वह देश की आजादी के संघर्ष को ज्ञात्मा हो और यहां तक कह देती है कि वह भीख में मार्गी हो आजादी है, जबकि असली स्वाधीनता 2014 में नई मोदी के प्रधानमंत्री बनने पर हासिल हुई है। हिमाचल से संबंध रखने वाली यह अधिनियम जब ऐसा कर्कश बयान में रही होती है, तो उसी दौरान न्यूज में वजीर राम सिंह पठनिया की पुष्पकथित पर हम उस महान शक्तिशाली को आदान-जलि दे रहे होते हैं। आश्वर्य यह कि देश कंगना के बड़बोलेन को कानों में रही डाल कर बर्दाश्त कर रहा है, जबकि आजाद भारत की मिट्टी का कण-कण आज भी अपने स्वतंत्रता सेनानियों का कर्जराह है। हिमाचल से आजाद टिंड फैज में शरीक हुए, सैकड़ों लोगों के लिए वह बयान अति निंदीय हो जाता है। बयान में उठी तरीफ का सत्य उसके भौतिक विचारधारा को परिमति कर सकता है या वह लोकों की खुली ही कि कैसे भी सिरियन्स टिप्पणी कर दे, लोकेन 'पदवी' की बासुरी बजाने के माहौल में आग कोई ठुकड़ा देश को ही शर्मिदा कर रहे, तो वह राणीय समान की भी तोहान है। यह हिमाचल की पुष्पकूम्ह, उन तमाम शहीद स्मारकों तथा उस इतिहास के प्रति अपमान है जो मेजर सोमानाथ शर्मा के नाम प्रथम परमवीर चक्र अलंकृत करता है। राणीय आजादी का इतिहास न भी पढ़ा हो, लेकिन भारतीय परिवेश में बच्चों की प्रवर्षिति के साथ ये पल जोड़े जाते हैं। देशभक्ति के गीत और नायकों की परिधान भी भारतोंका अवलोकन तब तक पूरा नहीं होता, जब तक दर गर्व और शर अपने आजादी के प्रवर्णनों को याद नहीं करता। वे तमाम योद्धा जो फारी पर चढ़े थे जो कभी जलियावाला बांग के नरसंहार में दर्ज हुए, उनकी चित्ताओं से आज भी आजादी के नायकों की अनुरूप सुनाई देती है। कंगना एक अच्छी अदाकारा हो सकती है, लेकिन उसकी प्रसिद्धि की कीमत हमारी आजादी का इतिहास नहीं चुका सकता। अगर वह बालीवुड की फिल्मों को ही काढ़े दें देख व समझ ले, तो मालूम हो जाएगा कि शहीद भगत सिंह, ऊँद्रु खिस्ति से ही बच्चों की प्रवर्षिति के साथ ये पल जोड़े जाते हैं। देशभक्ति के बाद भी बनी रही, जो पुनर्नोटों को जमा करने और उन्हें नए नोटों में बदलने की अंतिम शर्मी। ये गीतों के कालांगों, बिल्डरों और दलालों के कालांगों में भीड़ लगी थी। इसलिए एक निश्चित मात्रा में काला धन संपत्ति में परिवर्तित हो गया जिसे बाद में मुद्रीकृत किया जा सकता था। इस सोच में घाटक दोष यह है कि 'काली' सिफ़न ककड़ी नहीं है। आय और धन में अंतर है। 'काली आय' का सुनन आधिक गतिविधि पर आधारित एक प्रक्रिया है। जबकि कोई डॉक्टर 50 मरीजों को देखता है और 30 तक भुगतान की घोषणा करता है तो बाकी मरीजों द्वारा किए गए भुगतान का पैसा 'काली' आय है। यह 'अंडर इन्वेंसिंग' का एक उदाहरण है जो व्यवसायों द्वारा शून्य और संघर्ष पर देखता है और नहीं हिंदू धर्म के संदर्भ में शैतान और असुरों का उल्लेख भी होता रहा है, लेकिन किसी अधिर्मी और दैत्य ने धर्म की तुलना आसुरी वृत्तियों से नहीं की है। अलवता आज हिंदूल को आई-एस-आई-एस और नायजीरिया के बोको हारम सरीखे दुलान आलंकी संगठनों के समक्ष स्थापित करने की कोशिश जरूर की गई है। भारत के 100 करोड़ से अधिक और दुनिया के असंख्य हिंदू विचारकों और मतावलियों के गाल पर तमाचा मार रहा है। एक आधारित प्राणी और कृष्ण, बर्बर, हयार, पश्च की तुलना की जा सकती है? सलमान खुशी और कागिस के कुछ बैने, विचारीन प्रवक्ता कुर्कू कर सकते हैं, लेकिन वे भी जानते हैं कि हिंदू धर्म और हिंदूल संघ परिवार तक ही सीमित नहीं हैं। ये गुरु गोलवलक और नाथराम गोडसे कमोबेश हिंदूल के परमाय के अधिकृत विचारक और प्रवक्ता नहीं हैं, लिहाजा उड़े हुए गोलवलक संघर्ष के गाल पर तमाचा मार रहा है। एक आधारित प्राणी और कृष्ण, बर्बर, हयार, पश्च की जानते हैं कि हिंदू धर्म और हिंदूल की आधार का गाल पर तमाचा मार रहा है। एक आधारित प्राणी और कृष्ण, बर्बर, हयार, पश्च की जानते हैं कि हिंदू धर्म और हिंदूल संघ परिवार तक ही सीमित नहीं हैं। ये गुरु गोलवलक और नाथराम गोडसे कमोबेश हिंदूल के परमाय के अधिकृत विचारक और प्रवक्ता नहीं हैं, लिहाजा उड़े हुए गोलवलक संघर्ष के गाल पर तमाचा मार रहा है। एक आधारित प्राणी और कृष्ण, बर्बर, हयार, पश्च की जानते हैं कि हिंदू धर्म और हिंदूल संघ परिवार तक ही सीमित नहीं हैं। ये गुरु गोलवलक और नाथराम गोडसे कमोबेश हिंदूल के परमाय के अधिकृत विचारक और प्रवक्ता नहीं हैं, लिहाजा उड़े हुए गोलवलक संघर्ष के गाल पर तमाचा मार रहा है। एक आधारित प्राणी और कृष्ण, बर्बर, हयार, पश्च की जानते हैं कि हिंदू धर्म और हिंदूल संघ परिवार तक ही सीमित नहीं हैं। ये गुरु गोलवलक और नाथराम गोडसे कमोबेश हिंदूल के परमाय के अधिकृत विचारक और प्रवक्ता नहीं हैं, लिहाजा उड़े हुए गोलवलक संघर्ष के गाल पर तमाचा मार रहा है। एक आधारित प्राणी और कृष्ण, बर्बर, हयार, पश्च की जानते हैं कि हिंदू धर्म और हिंदूल संघ परिवार तक ही सीमित नहीं हैं। ये गुरु गोलवलक और नाथराम गोडसे कमोबेश हिंदूल के परमाय के अधिकृत विचारक और प्रवक्ता नहीं हैं, लिहाजा उड़े हुए गोलवलक संघर्ष के गाल पर तमाचा मार रहा है। एक आधारित प्राणी और कृष्ण, बर्बर, हयार, पश्च की जानते हैं कि हिंदू धर्म और हिंदूल संघ परिवार तक ही सीमित नहीं हैं। ये गुरु गोलवलक और नाथराम गोडसे कमोबेश हिंदूल के परमाय के अधिकृत विचारक और प्रवक्ता नहीं हैं, लिहाजा उड़े हुए गोलवलक संघर्ष के गाल पर तमाचा मार रहा है। एक आधारित प्राणी और कृष्ण, बर्बर, हयार, पश्च की जानते हैं कि हिंदू धर्म और हिंदूल संघ परिवार तक ही सीमित नहीं हैं। ये गुरु गोलवलक और नाथराम गोडसे कमोबेश हिंदूल के परमाय के अधिकृत विचारक और प्रवक्ता नहीं हैं, लिहाजा उड़े हुए गोलवलक संघर्ष के गाल पर तमाचा मार रहा है। एक आधारित प्राणी और कृष्ण, बर्बर, हयार, पश्च की जानते हैं कि हिंदू धर्म और हिंदूल संघ परिवार तक ही सीमित नहीं हैं। ये गुरु गोलवलक और नाथराम गोडसे कमोबेश हिंदूल के परमाय के अधिकृत विचारक और प्रवक्ता नहीं हैं, लिहाजा उड़े हुए गोलवलक संघर्ष के गाल पर तमाचा मार रहा है। एक आधारित प्राणी और कृष्ण, बर्बर, हयार, पश्च की जानते हैं कि हिंदू धर्म और हिंदूल संघ परिवार तक ही सीमित नहीं हैं। ये गुरु गोलवलक और नाथराम गोडसे कमोबेश हिंदूल के परमाय के अधिकृत विचारक और प्रवक्ता नहीं हैं, लिहाजा उड़े हुए गोलवलक संघर्ष के गाल पर तमाचा मार रहा है। एक आधारित प्राणी और कृष्ण, बर्बर, हयार, पश्च की जानते हैं कि हिंदू धर्म और हिंदूल संघ परिवार तक ही सीमित नहीं हैं। ये गुरु गोलवलक और नाथराम गोडसे कमोबेश हिंदूल के परमाय के अधिकृत विचारक और प्रवक्ता नहीं हैं, लिहाजा उड़े हुए गोलवलक संघर्ष के गाल पर तमाचा मार रहा है। एक आधारित प्राणी और कृष्ण, बर्बर, हयार, पश्च की जानते हैं कि हिंदू धर्म और हिंदूल संघ परिवार तक ही सीमित नहीं हैं। ये गुरु गोलवलक और नाथराम गोडसे कमोबेश हिंदूल के परमाय के अधिकृत विचारक और प्रवक्ता नहीं हैं, लिहाजा उड़े हुए गोलवलक संघर्ष के गाल पर तमाचा मार रहा है। एक आधारित प्राणी और कृष्ण, बर्बर, हयार, पश्च की जानते हैं कि हिंदू धर्म और हिंदूल संघ परिवार तक ही सीमित नहीं हैं। ये गुरु गोलवलक और नाथराम गोडसे कमोबेश हिंदूल के परमाय के अधिकृत विचारक और प्रवक्ता नहीं हैं, लिहाजा उड़े हुए गोलवलक संघर्ष के गाल पर तमाचा मार रहा है। एक आधारित प्राणी और कृष्ण, बर्बर, हयार, पश्च की जानते हैं कि हिंदू धर्म और हिंदूल संघ परिवार तक ही सीमित नहीं हैं। ये गुरु गोलवलक और नाथराम गोडसे कमोबेश हिंदूल के परमाय के अधिकृत विचारक और प्रवक्ता नहीं हैं, लिहाजा उड़े हुए गोलवलक संघर्ष के गाल पर तमाचा मार रहा है। एक आधारित प्राणी और कृष्ण, बर्बर, हयार, पश्च की जानते हैं कि हिंदू धर्म और हिंदूल संघ परिवार तक ही सीमित नहीं हैं। ये गुरु गोलवलक और नाथराम गोडसे कमोबेश हिंदूल के परमाय के अधिकृत विचारक और प्रवक्ता नहीं हैं, लिहाजा उड़े हुए गोलवलक संघर्ष के गाल पर तमाचा मार रहा है। एक आधारित प्राणी और कृष्ण, बर्बर, हयार, पश्च की जानते हैं कि हिंदू धर्म और हिंदूल संघ परिवार तक ही सीमित नहीं हैं। ये गुरु गोलवलक और नाथराम गोडसे कमोबेश हिंदूल के परमाय के अधिकृत विचारक और प्रवक्ता नहीं हैं, लिहाजा उड़े हुए गोलवलक संघर्ष के गाल पर तमाचा मार रहा है। एक आधारित प्राणी और कृष्ण, बर्बर, हयार, पश्च की जानते हैं कि हिंदू धर्म और हिंदूल संघ परिवार तक ही सीमित नहीं हैं। ये गुरु गोलवलक और नाथराम गोडसे कमोबेश हिंदूल के परमाय के अधिकृत विचारक और प्रवक्ता नहीं हैं, लिहाजा उड़े हुए गोलवलक संघर्ष के गाल पर तमाचा मार रहा है। एक आधारित प्राणी और कृष्ण, बर्बर, हयार, पश्च की जानते हैं कि हिंदू धर्म और हिंदूल संघ परिवार तक ही सीमित नहीं हैं। ये गुरु गोलवलक और नाथराम गोडसे कमोबेश हिंदूल के परमाय के अधिकृत विचारक और प्रवक्ता नहीं हैं, लिहाजा उड़े हुए गोलवलक संघर्ष के गाल पर तमाचा मार रहा है। एक आधारित प्राणी और कृष्ण, बर्बर, हयार, पश्च की जानते हैं कि हिंदू धर्म और हिंदूल संघ परिवार तक ही सीमित नहीं हैं। ये गुरु गोलवलक और नाथराम गोडसे कमोबेश हिंदूल के परमाय के अधिकृत विचारक और प्रवक्ता नहीं हैं, लिहाजा उड़े हुए गोलवलक संघर्ष के गाल पर तमाचा मार रहा है। एक आधारित प्राणी और कृष्ण, बर्बर, हयार, पश्च की जानते हैं कि हिंदू धर्म और हिंदूल संघ परिवार तक ही सीमित नहीं हैं। ये गुरु गोलवलक और नाथराम गोडसे कमोबेश हिंदूल के परमाय के अधिकृत विचारक और प्रवक्ता नहीं हैं, लिहाजा उड़े हुए गोलवलक संघर्ष के गाल पर तमाचा मार रहा है। एक आधारित प्राणी और कृष्ण, बर्बर, हयार, पश्च की जानते हैं कि हिंदू धर्म और हिंदूल संघ परिवार तक ही सीमित नहीं हैं। ये गुरु गोलवलक और नाथराम गो

